

५५ आया जेठ

महाभाषा जेठ

ॐ हौं कालीमहा काली किं लिख्यते स्थापना
मउ कालीमन्त्र ॥ उड़ी शौ का ॥

ॐ हौं कालीमहा काली किं लिख्यते स्थापना
हाहा ॥ एउ कालीमन्त्र उउ उउ शौ का ॥

ASHA ARCHIVES 3141

नन्दकुमारगहाहितनीमांसस्य
ग्राथिवद्वयमवनलनमत्कन्ध
गामरकव । कल्याणीरुद्रका
लीयममहिषमहालृङ्गका

प्रहानीपाथान्नावादयन्नीप्रः
लयपत्रिनगावृक्षकंकाजवी
लम् । विष्टकं हानयानकाल
दलेननिश्वाहासइहानसूया

सूत्रागः प्रमहः प्रागुभिगलव
गिनः सप्यन द्विद्विहटा सद्यः
कृत्वा समिष्टा सनग जदिगिउ
त्रकूपटीमादधनाचासूत्राचलु

मल्लु मथमथोगालिनं चयमी
पूनाड ॥ १॥ चामक १०० मृगमं
कं प्रलयपनिगनंदकि १००
सुखं विम्वं क १०० नक्रुगहन

२ तं। धवक्षानगंदः शऊतिगदयत्
 पतिविकटजटाहृटकेकेकु
 मालं। उधुसुधसुदानयुनि
 नयनविधोपानपाग्राहवत्सा
 चव्वनीमहिस्वयंयुक्त

वृक्षकान्तान्न॥२

कटककान्तसंघानमयंकुर्वार
 पुनमरधसुककककहाहा
 स्यमयंकुलांगी। नित्येनृत्यप
 लाकाजमरुतिमिडिमाडिडिमा

हृन्तयंती पाथान्नन्दि कंजंज
पञ्चमसमाजं मयानाशुमेनी ॥
हृन्तयंती पाथान्नन्दि कंजंज
वातापसर्वस्य मिश्रान्नन्दिनी वा

षड्यष्टपल्यमनसुञ्जान्यपीज
ग्रहश्च ॥ हृन्तयंती मिश्रान्नन्दिनी
मविषधनाष्टिकादग्निजोनामा
गोष्ठागुणं पञ्चमं वननूचिनचिर्गम

स्य संतीह दद्या ॥ ३ ॥ माय्यो रु द्या
निकाया मु ति मद्य ह द नी य व
की रु रु क्ता सं ध्या का ना न ना ल व
न नू वि न वि ग न द नारु क वि रु ॥

तषां दा नि शु ना ग स द्वा न म न स रु थं ना स
यं रु या नु मा ता स द्वा न धा न यं ती म म रु
न नु रु थं रु द्वा रु द्वा काली ॥ मा नी न
म सृ नि का रु थ ह नं गी त द्वा ना चा ट ना

मीशो लाग्य दयावहं पुत्रिक नंदः
सपुत्रपुत्रं तमाया हृकमनुमिहृ
लदं हृदं प्रि संधं पतन ॥ १० ॥
निद्रुदमा मले वनन विह माया हृक ॥

अं नमो श्री गुरु काल्य ॥ ॥ सर्व सा स
प्रीम जी कृत्वा जल लभधन ॥ ॐ वक्ष
दकं हृदं हृत्वा हृ गिन्ध माय दु नि
वन्ध्या लयु गिन्ध मां का प्रयं ॥ ॥ ग
तमूल न्यामः ॥ ॐ विष्णु चः ॥ ॐ अ

ॐ
स्य श्री महा मात्री द्वादश भवैरी मंत्र स्य
वन चक्रुषि न नू दू कु दः श्री महा
मात्री महा लक्ष्मि देवता ॐ काली
वी ॐ ॐ महा काली कील कं म म म

हामात्री रय र ग पु न धि न्म चक्रु द
ना क्रु स य म दू ग डा कि नी सु वी य द
व न म न का म न या य न म ॐ दू का
म्य सिद्धार्थ अथ विनियोगः ॥

निमिषि॥ॐ वनरविष्टुषयनमः॥
मुख॥ॐ जनरुष्टुष्टुदसनमः॥ हृद
य॥ॐ श्रीमहामानीमहानाकिद
वतायनमः॥ गुक्त॥ॐ कालीवीजा

यनमः॥ यादो॥ॐ महाकालीनाक
यनमः॥ सवारिद्र॥ॐ एवकालीकी
लकायनमः॥ वक्ष्मजलि॥ॐ ममः
महामानीरयहृमयमयिनाचवक्ष

नाकसयमद्रगजाकिनीनाकिनीस
 वेपिद्रवेनामनकामनयायनमः
 काम्यसिद्धार्थजयविनिर्वागः ॥
 अथकन्यासः ॥ ॐ कालीजुंगुष्टाः
 ॐ महारयनिवाविनीभक्त्या

त्यां २ ॥ ॐ महाकालीगर्जनीत्याह्वा
 हा ॥ ॐ एद्रकालीमध्यामात्यावषट्
 ॐ महामायादेवीजनामिकात्यां
 ह ॥ ॐ महादेवीकनिष्ठात्यावौषट् ॥

ॐ महा रात्रि निवा निधी कन गल पुष्पा
 ल्या ज म्दा य रुट् ॥ ॥ ॥ एवं द द्या दि ॥
 ॐ रु रु वः स्वः ॥ ॥ टिका नै दि गंध
 नै रु र्या ॥ ॥ ॥ अंध ग क च ग्या मा या
 उद्दिता ल य २

मा रु का धा रा न्या सं या त्म पू जा
 नै वि धा य ॥ ॥ ॥ अथ य रा क वि धि
 ना च गु ना जं नि म्मा नि पू ना व रि ती वी
 र्थ नि धा य धी ० न किं पू ज य यं थ ॥ ॐ

मं० का० यनमः॥ ॐ कालाग्निवृद्धा
य२॥ ॐ पुष्कले२॥ ॐ आधनलक
यनमः॥ ॐ कृष्णमहिनां य२॥ ॐ अ
नंता२॥ ॐ सुधा सुधय२॥ ॐ

मलिदीया य२॥ ॐ त्रिनामलिगु
हाय२॥ ॐ मृगनाय२॥ ॐ धानि
जागाय२॥ ॐ वत्सवदिकाय२॥
ॐ मलियीभय२॥ ॐ नानादव

स्वा नमः ॥ ॐ वरु मां सा स्थि मा
द मान निव त्या २ ॥ ॐ न व त्या २
ॐ न व म र तु त्या २ ॥ ॐ ध मा य २
ॐ हाना य २ ॥ ॐ वे ग ह्ना य २ ॥ ॐ

ने न्व र्था य २ ॥ न्वे अ ध म् ॥ अ ह्ना
न ॥ अ वे ग ह्ना ॥ अ ने न्व र्था य निमः ॥
ॐ अ न्ना य २ ॥ ॐ य द्मा य २ ॥ ॐ अ
ह्ना य २ ॥ ॐ सा म म तु ला

य २ ॥ ओं वक्रि मयु लाय २ ॥ ओं स
हवाय २ ॥ ओं न न क स २ ॥ ओं त ग
म स २ ॥ ओं आत्मन २ ॥ ओं प न मा
त्मन २ ॥ ओं ज्ञातात्मन २ ॥ ओं ॐ

कार्य २ ॥ ओं ज्ञानाय २ ॥ ओं को या
य २ ॥ ओं कामिन्य २ ॥ ओं स स दा
यिन्य २ ॥ ओं न त्य २ ॥ ओं नु ति
पि आय २ ॥ ओं ज्ञान न्दाय २ ॥

मन्त्रात्मन्त्रे २ ॥ ॐ पुनः २ ॥ ॐ
अपनाथ २ ॥ ॐ क्रोमदा निव
महापुनासनाथ २ ॥ ॐ तीर्थ
रम्भनादि यंच वलि गत्व रम्भ

कर

चनंच २ ॥ नामकृत्वा एदु कालिं
ध्मात्वा दिवाचकादि निरुक्तम्
मांजलिं लहामुदया गृहीताम्
ता ॥ मात्तुलिनी वृक्ष वत्

मायनलिकनीत्वा त आयेदं वि

लाया द दयं समानीय मूलम्

हिं ध्यायेयं ॥ ॥ ॐ कृष्णमा

नेष्टलाक्री मसि मूलिनम्

ASHA ARCHIVES

माय

ॐ ह्रीं क्लीं ॥ वज्रादि ॥ ॐ स्व
स्वाय पापु ॥ एवं मृदुये ॥ वनाथे ॥
भूरायाथे ॥ पाण्मय ॥ कपाशाय ॥
॥ कुर्विष्णु नमः ॥ ज्ञानिका

यन्मः ॥ श्रीं हस्तः सूर्याय नमः
 ॥ श्रीं गलपतये नमः ॥ ॥ ॐ नमो
 दि ॥ वजादि ॥ मूला मृधुना ॥
 मूधवलिंदयाग ॥ ॐ श्रीं इन्द्राय नमः ॥

हिजगमांजननिमहा ~~म~~मानी
महाकालिरुद्रकाली०००मंवल्लि
गृक्षरममंहरगपुमापिगमचव
मनाकसंयमदूतदाकिनीगम

किनीहर्षामद्वानसंहानय
महामानीहयगमनिर्करुनरसि
द्विंदुहि२रु२जीरुद्रपीमहा
मायोनेमःस्वाहा॥॥मूलमकु

दशध्यानविज्ञापः ॥ अथ क
नानावति ॥ ॐ अथ क र ग ग म
क र य स ह उ न स प वि वा ना ल
मात्री ह य पु ग न या उ ष सा य क न

न क ग नाना म हा मा र्थ म हा काले
रुद्र काले व ष वति त्रि व द या मि
नमः स्वाहा ॥ ॐ या ० संकल्पः ॥ न
सुलभुः ॥ ॐ या र्थ ना जान त्वां ध

ननीं धृत्वा यत्नतः । ॐ ह्रीं नमो यानी
हवतानि हृत्तले वलि नृही वा
विधिवत् प्रयत्नः । अन्यत्तु वा संयं
त्रिकल्पेन तु कृत्वा मातु गान्यत्तु नमा

सुतं सः । ॐ मित्रा नमः ।
यत्तु गच्छतः । ॥ वक्रा नमः ।
न्यासः । वलि विमर्शनः । दक्षिण
नमस्तु नमो वलि मित्रं । ॥ आच

मनं गुमानं ध्वं ॥ यं ध्वं व ॥ ॐ
मिमह मात्री महि यमा ॥ गुहं ॥

ॐ महामात्री महि यमा नमः ॥ ॐ

ॐ नमो श्रीमहामाया कृष्णाय
मनुष्यवत्तु विष्णुषिः जने क
कुन्दः श्रीमह मात्री महानाकि
द्वेवमाकात्रीवी ॐ महानीनाकि

ः रुद्रकालीकीलकं मम मंदाभा
नीरुयरुतद्रुतपिन्मचन्मकिनी
गकिनीसर्वयिद्रुवन्मनका म
नयापनमः सुकाम्यसिद्धार्थ

अपविनिथागः ॥ १ ॥ नित्रसि ॥ ॐ
वनत्रविष्णुमयनमः ॥ २ ॥ मूर्ख ॥
ॐ पंक्तिचन्दनमः ॥ ३ ॥ इति ॥ ॐ
महापानीमहानकिर्दवनायनमः ॥

गुञ्ज ॥ ॐ काली वीजा ये नमः ॥
पादयाः ॥ ॐ महाकाली गङ्गा
नमः ॥ सर्वारम्भ ॥ ॐ रुद्रकाली की
लकाय नमः ॥ वक्षःजलि ॥ ॐ मम

महामात्री रुद्रनिवात वार्षविनि
भागः ॥ ॥ न्यासः ॥ ॐ काली अं ॥
ॐ महाकाली ग ॥ ॐ रुद्रकाली म ॥
ॐ महामाया देवी जू ॥ ॐ महाद

वीकनिष्ठायां ॥ ॐ महाहयानेवाः
नितीकत्रयत्र ॥ ॥ नवंददयादि ॥
ॐ हृदयः स्वः ॐ ॥ कृदिकारिद
नादिग्रन्थनं ॥ ॥ ध्यानं ॥ ॐ शुभं

माकाटनामीमसिमलिनमूखीः
मूककलीनूदनी नाहं हयावंदती
अगदखिलमिदं ग्राममकंकनामि ॥
हस्तायां क्षत्रयनी कलदनलानिखा

सन्निशं धानमृगं दंतैर्जुं वृहलारै
: यनि हनतु रुयं पादुमां रुद्र का
ली ॥ ॥ प्रहम्यदं वी उरगमाध
त्रिशीवं हनि धात्री विगुल्लतध

निर्ली ॥ ॥ कै कालिकी वाधन कार्या
सिद्धिं मा र्था कं स्यात्पठन मन
धुः ॥ ॥ को लारवा विरूट हि म
गि नि निखन या अरु आ लान्नु द

गा २
रत्न सो नाकु सिंधुद रत्न मगध धूत
गंधामे त्रय मृगन्द ॥ पाताले वा
न विरक्त स कल उ विगता सर्व
लाक उ सिद्धा सामे कामांददा उ

बहु सिमवदना वलु मो वीधु व
लु ॥ २ ॥ वक्राही के मलेन्दु सो
म्यवदना माह श्वरी लीया को मा
नी निपूद प्यना मन कनी चक्राय

धावे सुवी ॥ वाग्राही यनधान्य
चनमस्वीनुन्दी च वक्राय धावा
मूलुगलदवनदसहिमानकमु
मांमागन ॥ ॥ यश्चाखद्वान् को

टीकपिलमनूजामलुलं पद्य
यानकृत्वादेषारुमा ॥ ॥ प्रज
मनसिनिनः ॥ ॥ लोषनं गार्कषकः
॥ ॥ पूरुर्न कालवाशे श्याममहिष

महाशृंगमादायधारलो. पाथान्न
वन्द्यमानः पुत्रं मुदिगय हवः
कालवापिः । ~~आगे~~ लाखक कव
लीपुष्पमयविस्तृष्टिकाकांग
लो

वर्ष. लोहनेकनकत्वावनदाः
निगदनमात्मनः पादरत्नसं
दिग्भसानासुहृन्धममिअगदि
दंजाजानाकर्तुपूनावर्द्धभाद्धः

प्रवक्षः क्षुब्ध वितत शुभा सापिद
वीप्रसीद ॥ ~~का~~ दं सुभा नोद मुखसिं
सुखविनतिजगदवि सुखं कृष्ण
क्षुब्ध संसाय स्यात् न का लेन न नूधि

नवला सं सुवाद्दुमधूम ॥ काली
काया लिनी त्वं न वल यन न ना
शगिनी या गमूडा वक्षः अक्षः
वमा नी मनल रुयह ना त्वं निनी

चक्षुष्यत्। **॥** संग्रामभद्रमिष्ट
त्वात्स्वविनयगतेः सरुष्टानां नि
भाहिम्मा लाव द्वेष्ट्यद्विगतशु
जलदात्वं मम न प्रविष्टा **॥** द
मा २

धृष्टुः पुष्टुः यथैव नय
नावद्वनारगन्धकांची मलासि
द्यग्रहस्तान् विनमधुमदाहा प्र
मशानि नमः **॥** कर्ह्यरु

लुक्कहिं प्रविन न पटिका वंष्टि नं
रिं कं स्वरु यार्थ साध्या ना लाः
न नाली द्यटि न मूरव मयी द्यल्लि
ना शं स्वरु यार्थ प्रत्यय यार्थ रुग्ण स्वरु

मुग वरु लव न्मा द रु व र्वा द्विधा
: पाया ल्काया लिनी मां द न न मं
थ म थ क्का टि ता प्र न मां सा ॥ ७ ॥
कृत्वा या गाल मूल ल्का म क न दान